ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

दादू और निर्गुण भक्ति साहित्य

शम्भु लाल मीणा
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
स्व.पं.नवल किशोर शर्मा
राजकीय स्नाकोत्तर
महाविद्यालय,
दौसा,राजस्थान

सारांश

संत दादू जी का अविर्भाव जिस समय हुआ उस समय हमारे देश में इस्लाम धर्म का बोलबाला था। मुस्लिम काल में बहुत से हिन्दू मंदिरों को गिराकर मूर्तियाँ नष्ट कर दी गई थी। इस प्रकार इस्लाम ने भय और आतंक का वातावरण पैदा कर रखा था। 14वीं शताब्दी में हिन्दू–मुस्लिम सम्प्रदायों में आपसी सहयोग का वातावरण बना। मुस्लिम समाज में एक अल्लाह को माने जाने के कारण समाज सुसंगठित था। इसमें बड़े–छोटे का कोई भेद भाव नहीं था, जबकि हिन्दू समाज अनेक जातियों, मतों, सम्प्रदायों एवं वर्गों में विभक्त था। ऊँच–नीच, वर्ण भेद अश्पृश्यता का बोलबाला था। वर्ण व्यवस्था के कारण समाज उच्च व निम्न वर्ग में बंटा हुआ था। सवर्णो द्वारा निम्न वर्गो के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। उससे वह कुंठित होता जा रहा था। इस उत्पीड़न और शोषण व्यवस्था से दुखी होकर निम्नवर्ग, को इस्लाम धर्म अपनाने को बाध्य होना पड़ा।

मुख्य शब्द : आत्मतत्त्व, संत दादू जी, हिन्दू–मुस्लिम सम्प्रदाय।

प्रस्तावना

15वीं शताब्दी में इस्लाम में भी हिन्दू धर्म की भाँति कई कुरीतियों और बाह्याडम्बरों का सूत्रपात हो गया था। फकीरों की दरगाह में सिर नवाना, फूल चढ़ाना, रोजा, जकात, हज के रूप में बाह्य आडम्बर पनपने लगे थे। हिन्दू और मुस्लमान दोनों ही धर्मो के लोग सत्य के मूल रूप को छोड़कर बाहरी रूपों में उलझ चुके थे।

ऐसे संक्रमणकाल में पाखंड और बाह्याडम्बरों को दूर कर मूल तत्त्व (आत्मतत्त्व) की पहचान कराने हेतु रामानंद कबीर, नानक, दादू आदि संतो का आविर्भाव हुआ । इन संतो ने अपनी गहन साधना एवं आत्मानुभव के प्रत्यक्ष दर्शन से अध्यात्म ज्ञान का प्रचार–प्रसार किया। इस मार्ग में उनको सामाजिक विरोध, शासन तंत्र का दंड एवं धार्मिक विरोध का भी सामना करना पड़ा । किन्तु ये संत अपने सन्मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए ।

संत दादू दयाल जी का जन्म संवत 1601 में फाल्गुन सुदी अष्टमी को गुजरात के अहमदाबाद नगर में हुआ था। किवदंती के अनुसार अहमदाबाद के लोदीराम ब्राह्मण के कोई संतान नहीं थी। संतो के आशीर्वाद से साबरमती नदी में स्नान करते समय कमलदल समूह में तैरते हुए बालक की प्राप्ति हुई।

इनकी जाति के बारे में विद्वानों में मतभेद है । कुछ विद्वान इन्हे मोची(चर्मकार) कुछ इन्हें मुसलमान मानते है। मुगल शासक अकबर उनके चमत्कारों से प्रभावित होकर उनका भक्त बन गया था। दादूजी की सलाह पर बादशाह ने गो वध बंद करवाने का फरमान जारी किया ।

अध्ययन का उद्देश्य

संतदादू के आविर्भाव के समय देश में इस्लाम धर्म का बोल–बाला होने के कारणभय और आतंक का वातावरण छाया हुआ था। समाज में ऊँच–नीच, जाति–धर्म, मत, सम्प्रदाय, अस्पृश्यता, अंधविश्वास, बाह्याडम्बरों से लोग परेशान थे। संतदादू ने अपनेसरलऔर मधुर उपदेशों से जनसामान्य को निर्गुण भक्ति का संदेश दिया। उन्होंने ईश्वर भक्ति, नामस्मरण, सत्संग, सद् आचारण को अपनाकर सांसारिक माया मोह, प्रपंच से दूर रहने का आग्रह किया। उनके मतानुसार सच्चे मन से भक्ति करने से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है।

दादूजी ने अहमदाबाद से साधना के लिए राजस्थान के करडाला, सांभर, आमेर, दौसा को चुना। दौसा में गेटोलाव धाम को अपनी साधनास्थली बनाकर सुन्दरदास जी को दीक्षा प्रदान की। सुन्दरदास जी दौसा वाले दादूपंथ के उदीयमान नक्षत्र गिने जाते है। दादू जी का निर्वाण संवत 1660 में माना जाता है। दादू के बाद यह सम्प्रदाय चार भागों में विभक्त हो गया था। (1)खालसा (2) विरक्त तपस्वी (3) स्थानधारी व उतराधे (4) नागा[1]

दादू की वाणी आत्मा की शांति के लिए रामबाण औषधि है। यह मनुष्य को सत्यमार्ग पर आगे बढ़ाने का उपाय है। वाणी में दादूजी ने जीवन के यथार्थ अनुभवों को सरल, भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इनकी शब्दावली में हिन्दी, गुजराती, पंजाबी, मराठी तथा फारसी भाषा के शब्द देखने को मिलते हैं।

निर्गुण संतो ने मानवता, अद्वैतवाद, पाखण्डों के विरोध, गुरू को महत्त्व, नाम स्मरण, विश्व बंधुत्व, वर्ण व्यवस्था, के विरोध पर बल दिया। दादू में भी निर्गुण संतो के गुणों को देखा जा सकता है। वे निराभिमानी , सरल, जिज्ञासु संत थे। उनका ग्रंथ 'अनुभववाणी' है। उन्होंने अपने पंथ के बारे में कहा है–

भाई रे ऐसा पंथ हमारा।
द्वै पख रहित पन्थ गहि पूरा, अवरण एक अधारा।।
वाद–विवाद काहू सो नाही, माही जगत थे न्यारा।
समदृष्टि सुभाय सहज में, आपही आप विचारा।।[1]

दादू ने कबीर की निर्गुण भक्ति धारा को ही आगे बढ़ाया। कबीर की तरह वे भी निर्गुण राम को मानने वाले थे। उनका ईश्वर कौशल्या के गर्भ से पैदा होने वाला राम नहीं था। वह तो निराकार है, जिसका न जन्म होता है न मुत्यु । न वह सोता है न जागता है। सारा संसार उसी से पैदा होकर उसी में विलीन हो जाता है। न वह घटता है न बढ़ता है , न वह उठता है न बैठता है। वह पूर्ण है, निश्चल है, एक रस है, निर्मल है, सत्य है, अविचल व स्थिर है।

उठै न बैठे एक रस, जागता सोवे नाहि।।
मरे न जीवे जगत गुरू, सब उपजि, खपै उस मांहि।।[2]

दादू ने ईश्वर प्राप्ति के लिए भक्ति के मार्ग को ही अपनाया है। पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ वहाँ पत्र है, तन मन रूपी वहाँ चन्दन है , प्रेम रूपी माला है, अनाहद नाद घण्टा है, ज्ञानरूपी दीपक है, प्राण रूपी दादू ने भी नाम स्मरण पर बल दिया है। उन्होंने कहा है –

(1) **दादू नीका नाम है सो तू, हिरदै राखि।।**
पाखण्ड परपंच दूरि करि, सुनि, साधुजन की साखि।।[3]
(2) **दादू नीका नाम है, आप कहे समझाइ।।**
और आरम्भ सब छाडि दे, राम नाम ल्यौ लाई।। [4]

दादू का रहस्यवाद भी कबीर के रहस्यवाद से मेल खाता है। प्रारम्भ में जीवात्मा उस अव्यक्त दिव्य शक्ति से अपना नाता जोड़ती है, जैसे –

(1) **चलि दादू तहॅं जाइये, जहं मरै न जीवे कोई।।**
आवागमन को भय नहीं, सदा एक रस होई।।
(2) **चलि दादू तहॅं जाइये, जहं चन्द सुर नहीं जाइ।**
रात दिवस की गमि नहीं, सदजै रह्म समाइ।।
(3) **चलि दादू तहं जाइये, माया मोह थे दूरि।।**
सुख–दुख ब्यापै नहीं, अविनासी घर पूरि।। [5]

रहस्यवाद की दूसरी दशा में आत्मा–परमात्मा को प्राप्त करने के लिए बेचैन हो जाती है, यह विरह दशा कहलाती है –

यह तन जालों यह मनगालों, करवत सीस चढ़ाऊ रे राम।।
सीस उतारों तुम पर वारों, दादू बलि जाऊ रे राम।।

रहस्यवाद की तीसरी अवस्था में आत्मा का परमात्मा से मेल हो जाता है जैसे–

राम तू मोरा हू तोरा पाइन हम निहोरा।
एकै संगै वासा, तुम ठाकुर हम दासा।।[6]

इस दशा में साधक ब्रह्म में डूब जाता है, अगम–अगोचर की लीलाओं से आनंद की अनुभूति करता है किन्तु वर्णन नहीं कर सकता । इसे वे गूंगे का गुड मानते है–

(1) **एक कहू तो दोय है, दोय कहूँ तो एक।**
यो दादू हैरान है, ज्यों है त्यों ही देख।
त्यों राम रसायन पीवता, सो सुख कह्या न जाइ।।[7]

ईश्वर प्राप्ति के दोनों मार्ग ज्ञान व भक्ति में से साधक अपनी इच्छानुसार किसी एक मार्ग को ग्रहण करता है। दादू की वाणी में श्रवण, कीर्तन व स्मरण का निरूपण है।

निगुर्ण संतो की भांति दादू ने योग प्रक्रिया को अपनाया है। वे हठ योग कियाओं को ज्यादा महत्त्व देते थे। वे शारीरिक क्रियाओं द्वारा स्थूल शरीर पर विजय प्राप्त करना चाहते थे। चितशुद्धि से परमात्मा का साक्षात्कार करते थे। प्राणायाम, स्वरोदय, इड़ा , पिंगला, सुषुम्णा, कुण्डलिनी की जागृति षट् चक्रभेद आदि दोनों में समान होते है। इस ब्रह्म में ध्यान लगाने से अहनद नाद सुनाई पड़ता है। जैसे –

शब्द सुई सुरति धागा, काया कंथा लाई।।
दादू जोगी जुग जुग पहिने, कबहू फाटि न जाइ।। [8]

दादू ने षट्चक्रो, कुण्डलिनी, प्राणायाम पर भी बल दिया। कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होने पर ब्रह्मद्वार खुलता है। जीव ब्रह्म में मिल जाता है। और संसार के अवागमन के चक्र से मुक्ति मिल जाती है। जैसे –

जामण मरण जाई भव भाजै, अवरण के घर वरण समाइ।
दादू जाय मिलै जग जीवन तब यहू आवागमन बिलाइ।।[9]

दादूजी ने समत्व भावना पर भी बल दिया है। गीता में समत्वदर्शन व समत्वयोग का उल्लेख मिलता है। दादू ने भी कहा है –

आतम भाई जीव सब, एक पेट परिवार।।
दादू मूल विचारिये तो , दूजा कौन गवांर।।[10]

दादू जीवन का ध्येय मोक्ष प्राप्ति मानते है। चित्त शक्ति का अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित होना ही मुक्ति है। जीवन रहते हुए मुक्ति न मिलने को वे जीवन की बर्बादी मानते है जैसे–

जीवत मेला ना भया, जीवत परस न होई।।
जीवत जगपति ना मिले, दादू बूडै सोइ।। [11]

उनके मतानुसार अविद्या आदि बंधनों का त्याग कर परमात्मा से मेल कर लिया तो वास्तविक जीना (मुक्ति) है। मरने के बाद परमात्मा में मिलना तो मरना ही है। पिण्ड मुक्ति (स्थूलशरीर) तो सभी करते हैं किन्तु प्राणमुक्ति अर्थात जीवन मुक्ति तो कोई विरले ही व्यक्ति कर पाते है जैसे –

पिण्ड मुक्ति सब कोइ करै, प्राण मुक्ति नहिं कोइ।
प्राण मुक्ति सतगुरू करै, दादू विरला होई।। [12]

संतो ने परमात्मा की प्राप्ति के लिए विरह तत्व को प्रमुखता दी है। विरह से मन की मलिनता नष्ट हो जाती है और वह सोने की तरह शुद्ध बन जाता है। कबीर ने कहा है –

कबीर हँसना दूर कर, रोने से कर प्रीत।
बिन रोये क्यों पाइये, प्रेम पियारा, मीत।।

दादू ने भी कबीर की तरह विरह को जीवन में आवश्यक माना है। उन्होनें ईश्वर दर्शन के लिए ज्ञान, ध्यान, तप , योग आदि सब साधनों को त्याग कर विरह को अपनाने का आग्रह किया है । जैसे–

(1) **ज्ञान ध्यान सब छाडि दे, जप तप साधन जोग।**
दादू विरहा ले रहै, छाडि सकल रस भोग।।[13]

(2) **प्रीति न उपजै विरह बिन, प्रेम भगति क्यों होई।।**
सब झूंठे दादू भाव बिन, कोटि करै जे कोई।।[14]

मध्यकाल के संत बहुत पढ़े लिखे नहीं थे, किन्तु सत्संग द्वारा उनका विवेक जाग्रत हो गया था। दादू वाणी के अध्ययन से पता लगता है कि उनके दार्शनिक सिद्धान्त बहुत सरल और परिपक्व है। उन्होंने ब्रह्म , माया , जीव, जगत, आत्मा–परमात्मा का अपनी वाणी में उल्लेख किया है जैसे –

(1) दादू बंध्या जीव है , छूटा ब्रह्म ।।
(2) कर्मों के बसि जीव है, कर्म रहित सो ब्रह्म ।।
(3) माया का गुण बल करै, आपा उपजै आइ।।
राजस तामस सात्विकी, मन चंचल है जाइ।।[15]

दादू जी का मानना है कि ब्रह्म से ही सारी सृष्टि का निर्माण हुआ है। जैसे–

पहिली कीया आप थैं, उत्पत्ति ओंकार।
ओंकार थैं ऊपजै, पंच तत्व आकार।। [16]

उन्होनें संसार को मिथ्या बताया है और ब्रह्म को सत्य बताया है। माया हमें भ्रमित करती है, यह बाजीगर व नट की भांति अपनी कला दिखा रही है।

साधना उद्देश्य प्राप्ति के लिए आवश्यक है। साधना में अंहकार का त्याग होना चाहिए।
उन्होंने कहा है –

जहॉ राम तहं मैं नहीं, तहं नाहीं राम।।
दादू महल बारीक है, द्वै को नांही ठाम।। [17]

ईश्वर के नाम स्मरण से ही मन को एकाग्रता प्राप्त होती है। हरिस्मरण कर वास्तविक स्वरूप वही है जब रोम–रोम में राम नाम की व्याप्ति हो जाय और कभी भी हरि चिंतन से मन का वियोग न हो। उन्होंने कहा है –

नाम लिया तब जानिये, ज बतन मन रहै समाइ।
आदि अंति मधि एक रस, कबहूँ भूलि न जाइ।[18]

जब तक तन–मन के विकार नष्ट नहीं होंगे तब तक हरि सुमरिन संभव नहीं है जैसे–

दादू विषय विकार सो, जब लग मन रात।।
तब लग चित्त न आवई, त्रिभुवनपति दाता।।

दादू जी ने विश्व बंधुत्व की भावना पर बल दिया है, आत्म समर्पण भी भक्ति के लिए आवश्यक है। जैसे–

तन भी तेरा, मन भी तेरा, तेरा पिण्ड दान।।
सब कुछ तेरा, तूं है मेरा, यहू दादू का ज्ञान।। [19]

सहज साधना पर दादू ने बल दिया है। परम तत्व अगम–अगोचर है। शून्य में सारा संसार समाहित है–

(1) सहज सुन्न में रहे समाना, सहज समाधि लगावै।।
उन्मनी रहै ब्रह्म को चिन्है, परम तत्व को ध्यावै।।
तहां निरंजन रमि रहा, कोई गुण व्यापै नांहि।। [20]

दादू निर्गुण भक्ति पर बल देते थे। उन्होंने निर्गुण राम को ही सत्य राम का नाम दिया है। वे भक्ति के लिए समर्पण, आत्मा को सहज ज्ञान पर बल देते थे। निर्गुण भक्ति में सतगुरू वंदना, नाम स्मरण, कण–कण में भगवान, सदसंगति, आत्म साक्षात्कार, सद आचरण पर बल दिया गया है। माया–मोह के प्रपंच से दूर रहकर सत्कर्म करने पर जोर दिया गया है। [21]

दादू जी ने कबीर के समान ही मूर्ति पूजा का विरोध किया है लेकिन उनके स्वर में मधुरता है –

पत्थर पीवे धोय कर, पत्थर पूजे प्राण।
अन्तकाल पत्थर गये, बहु बूडे इहि ज्ञान।। [22]

दादू जी ने सत्संगति पर बल देते हुए साधुओं को प्रत्यक्ष ईश्वर का दर्जा दिया है और उनके उपदेशों के अनुसरण से जीवन धन्य हो जाता है–

दादू निराकरण मन सुरति सौं, प्रेम प्रीति सों सेव।
जे पूजे आकार को, तो साधु प्रत्यक्ष देव।।

ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास ही जीवन को सफल बनाता है। मन की चंचलता भी ईश्वर भक्ति से ही दूर होती है।

आपा मेरे हरि भजे, तनम न तजे विकार।
निवरी सब जीव सो, दादू यहु मत सार।

दादू जी महाराज ने निर्गुण भक्ति और साधना द्वारा ही परमात्मा को प्राप्त करने का रास्ता बताया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि दादू निर्गुण भक्ति शाखा के सहज व सरल ह्रदय वाले संत थे, जिन्होंनें अपनी वाणी के माध्यम से समाज को सही रास्ता दिखलाया ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *दादू पंथी नागा समुदाय साधना एवं साहित्य – डॉ रतन लाल मिश्र रामानंद स्वामी (श्री दादू लीला धाम गेटोलाव, दौसा) की भूमिका*
2. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 13*
3. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर – पृ. 12*
4. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 18*
5. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 19*
6. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 21*
7. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 22*
8. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 35*
9. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 37*
10. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 44*
11. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 48*
12. *श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 49*

13. श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 53
14. श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 55
15. श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 65
16. श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 71
17. श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 75
18. श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 78
19. श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ. 81
20. श्री दादू दयाल जी की वाणी– सं. मंगलदास स्वामी, जयपुर पृ.85
21. श्री दादू अमृत जी– स्वामी रामसुखदास, जयपुर(संकलन कर्ता एवं लेखक)
22. दादूवाणी– भूमिका महन्त रामानंद स्वामी, सुन्दरबाग, दौसा (राज.)